उपसंहार

'हमज़ाद' उपन्यास में उत्तर आधुनिकता के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । उपन्यास के सभी पक्षों में एक नए तरह का समाज और साहित्य देखने को मिलता है। दरअसल 'हमज़ाद' का समाज और साहित्य संरचना पर आधारित न हो कर विखंडन पर आधारित है। मूल रूप में हमज़ात एक ऐसा उपन्यास है जिसमे वर्तमान समाज में हो रही घटनाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है। दरअसल उपन्यास में समकालीन समस्याओं को आधुनिकता की अवधारणा से जोड़ कर दिखाया गया है। कई माइनों में उपन्यास समाज में हो रहे नकारात्मक परिवर्तन का प्रतीक है। उपन्यास में पूंजीवादी व्यवस्था के उन सभी पहलुओं को तटस्थ रूप से प्रस्तुत किया गया है। जिनके माध्यम से पूंजीवादी व्यवस्था ने अवसरवादिता, शोषण और सामाजिक विषमता को जन्म दिया है।

उपन्यास स्त्री -विमर्श की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस उपन्यास में स्त्री शोषण के सभी स्तरों को दिखया जाता है। 'हमज़ात' उपन्यास में उत्तर-आधुनिकतावाद को लेकर द्वंद की स्थिति बिलकुल स्पष्ट है। सम्पूर्ण उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्यों को जिस प्रकार नकारा गया है वह एक नए समाज की तरफ बढने का प्रयास है। उपन्यास में सामाजिक संरचना एवं मूल्यों को विखंडित किया गया है परन्तु इस विखंडित समाज को किस प्रकार प्रगति से जोड़ा जाए इस पर उतने ठीक ढंग से बात-चीत नहीं की गई है । उपन्यास में एक नए समाज को किस प्रकार बनाया जाए उसकी विकल्पहीनता है। यह विकल्पहीनता आधुनिकता द्वारा बने समाज की स्थिति को दर्शाती है। उत्तर-आधुनिकता अपने मूल रूप में आधुनिकता का अगला चरण है परन्तु उपन्यास में इस विचार के माध्यम से कोई उचित निष्कर्ष नही मिल पा रहा है।

'हमज़ाद' उपन्यास में आधुनिकता के सभी सिद्धांतों का खंडन किया गया है। भाषायी संरचना के स्तर पर उपन्यास में जिस प्रकार नई भाषा का प्रयोग किया गया है वो निश्चित तौर पर एक नई भाषायी संरचना का निर्माण करता है। 'हमज़ाद' उपन्यास का पूरा कथ्य और विषय-वस्तु पाठक

को वह सुख नहीं देता जो आज से पहले तक हिन्दी उपन्यासों से पाठक को मिलता आ रहा था। उपन्यास में जो भी सामाजिक मूल्य हैं उन्हें खत्म होता दिखाया गया है। दरअसल उपन्यास में किसी भी प्रकार के सिद्धांतों को, प्रमाणों को, सत्य को बड़े सहजता के साथ के अप्रमाणित घोषित किया गया। अति यथार्थ प्रस्तुत करने वाला यह उपन्यास बेहद नाटकीयढंग से वर्तमान समय के मनोवृत्ति को व्यक्त करता है। वस्तुतः उपन्यास उन सभी तथाकथित विचारों को खंडित करता है जो 'हमज़ाद' को उत्तर-आधुनिकतावादी उपन्यास नहीं माना था। मूल रूप में उपन्यास उत्तर-आधुनिकता के सभी सिद्धांतों को आत्मसात करता करता है। उपन्यास के संवादों से इस तथ्य को प्रमाणित किया गया है। पूरे उपन्यास में कोई भी चरित्र या नायक ऐसी स्थिति में नहीं हैं जिसे पाठक वर्ग अपना आदर्श मान सकें। पूरा उपन्यास फिल्म की तरह प्रस्तुत किया गया है। जहां नाटकीयता और कौतुहल की स्थिति बार-बार देखने को मिली। उपन्यास मूलतः समाज की व्यवस्था पर प्रश्न-चिन्ह लगती है। मानवतावाद, वैज्ञानिक दृष्टि, विचारधारा एवं नैतिकता मूल्यों को उपन्यास में अनुपयोगी साबित किया गया है। कुल मिला कर इस उपन्यास में समकालीन समाज के व्यवस्था को एक प्रक्रिया के रूप में दिखने का प्रयास किया गया है। यह प्रक्रिया न केवल समाज की विषमताओं को प्रदर्शित करती है बल्कि आधुनिक समाज के भ्रम को भी खंडित करती है। उपन्यास खंडित हो रहे समाज का विकल्प ढुढ़ने का प्रयास करती है। असल में आधुनिकतावादी मूल्यों ने समाज को अस्तित्वहीन कर दिया है एवं पूँजीवादी व्यवस्था ने मानव को मानव शत्रु बनाया है। और इस विडम्बना से मुख नहीं मोड़ा जा सकता कि भारतीय मिथ और पुराणों में भी समाज कि विषमता से निकालने के लिए महज एक खोखली अवधारण ही प्रस्तुत कि गई है। यही कारण है कि इस उपन्यास उन सभी तथाकथित अवधारणा और मूल्यों पर प्रश्न-चिन्ह लगती है। उपन्यास का यह विचार उसे उत्तर-आधुनिकतावादी उपन्यासों की श्रेणी से जोड़ता है।